मैरी क्यूरी

इबी लेप्स्की

चित्र : पाओलो कार्डोनी

मैरी बहुत शर्मीली, संवेदनशील और भावुक थी. वो हर चीज गंभीरता से लेती थी और उसमें दूसरों के प्रति न्याय की गहरी इच्छा थी.

अगर उसे कुछ अनुचित लगता, तो वो अचानक रो पड़ती थी.

वो पांचों बच्चों में सबसे छोटी थी.

माँ ने अपने हरेक बच्चे को एक छोटा, प्यारा उपनाम दिया था. मैरी, जो सबसे छोटी थी, उसके अन्य बच्चों की तुलना में अधिक उपनाम थे: मान्या, मानुसिया, मानुसिना, एनसुपेयो.

अंतिम उपनाम मजाकिया था. वो माँ का दिया पहला उपनाम था, जब मैरी पालने में थी.

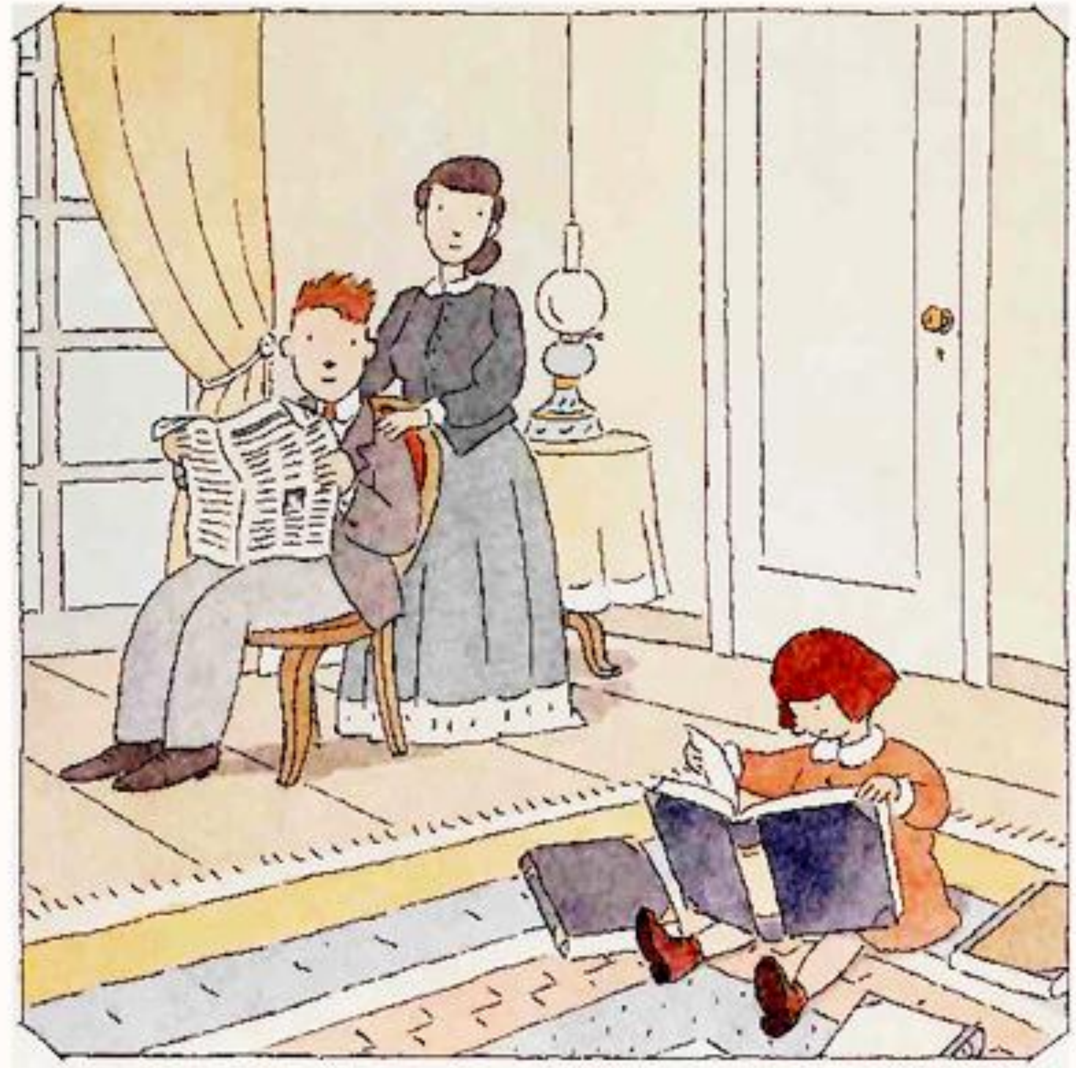

समय बिताने के लिए उसे किताबें पढ़ना पसंद था.

जब वो बोल और चल भी नहीं सकती थी तब भी मैरी कारपेट पर बैठकर एक के बाद एक करके किताबों के पन्ने उलटती थी.

"यह बड़ी अजीब बात है," माँ ने एक दिन अपने पति से कहा, "मैंने अपनी मानुसिया को बड़े ध्यान से किताबों के पन्ने पलटते हुए देखा है. यहां तक कि वो बिना चित्रों की किताबें भी पलटती है!"

लेकिन फिर माँ ने सोचा, "शायद उसे पन्नों के पलटने की सरसराहट पसंद हो!"

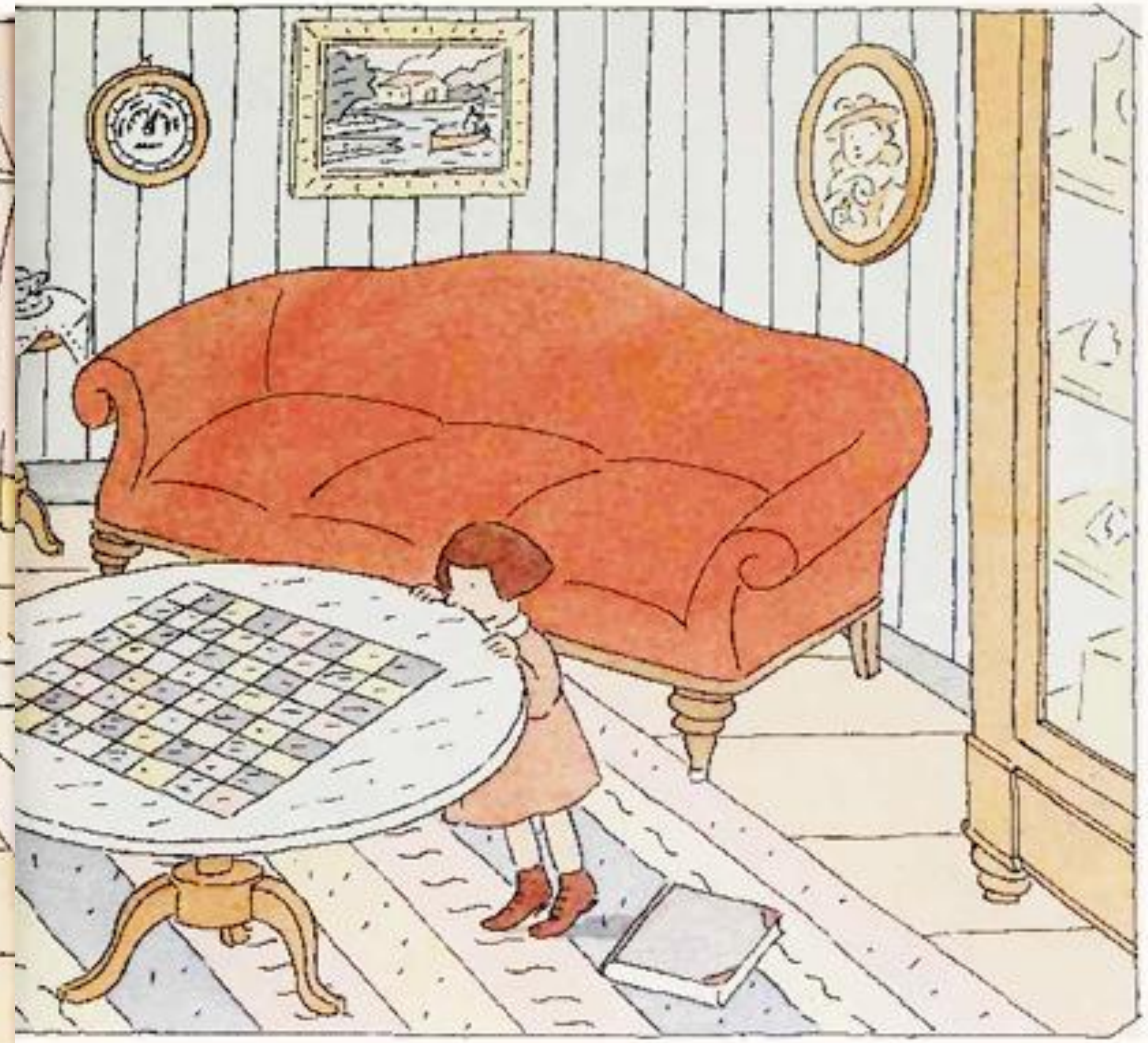

मैरी और उसका परिवार पोलैंड की राजधानी वारसा में रहता था.

हर सुबह, जब उसके भाई और बहन स्कूल चले जाते थे तो मैरी एक खोए हुए बच्चे की तरह पूरे घर में घूमती थी, और फिर बैठक (लिविंग रूम) में चली जाती थी.

उसे लिविंग रूम एक आकर्षक, शानदार जगह लगती थी.

उसे लिविंग रूम में सब कुछ पसंद था : किताबों से भरी लंबी अल्मारी, और तून (महोगनी) की लकड़ी की बनी लेखन डेस्क जो दराजों से भरी थी.

लाल मखमली सोफा, नीले-भूरे रंग की घड़ी, फ्रांस से लाए कीमती कप और प्लेटें थीं जिसे किसी को भी छूने की अनुमति नहीं थी, एक चौखानों वाली संगमरमर की मेज, और एक बैरोमीटर जिसे उसके पिता एक ख़ास दिन ध्यान से साफ़ करके सेट करते थे.

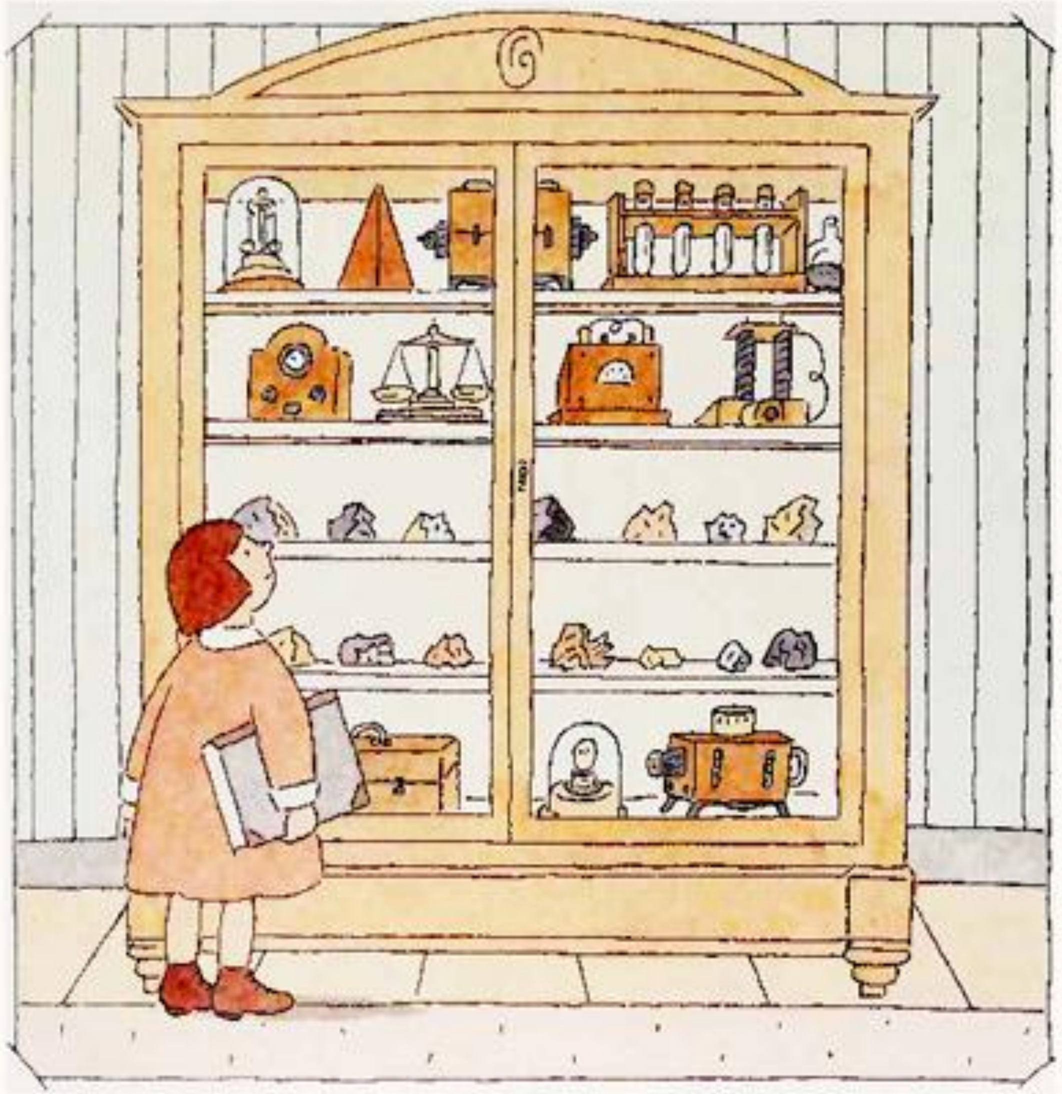

लेकिन उसे ऊपर वाला ग्लास कैबिनेट सबसे पसंद था क्योंकि उसमें कई छोटी, रहस्यमय वस्तुएं रखीं थीं. इसमें छोटे कांच की नलियाँ, छोटा तराजू, अजीब और जटिल उपकरण थे जिन्हें समझना कठिन था. वहां पर कई अजीब और रंगीन पत्थरों का संग्रह भी था.

कुछ पत्थरों पर गहरी नीली धारियां थीं. अन्य में छोटी गांठें थीं, और वो निश्चित रूप से चांदी के बने थे. कुछ पत्थर पारदर्शी थे जो बर्फ के टुकड़ों जैसे लगते थे. कई पीले थे. लेकिन मैरी का पसंदीदा पत्थर सुंदर गुलाबी रंग का था.

मैरी उन करामाती चीज़ों को निहारते नहीं थकती थी. हर दिन वो उन नमूनों में कुछ नया खोजती थी जो उसने पहले कभी नहीं देखा होता था. उन्हें छूने में उसे बड़ा मज़ा आता था!

एक दिन पिता ने मैरी को उस जादुई अल्मारी के सामने खड़ा हुआ देखा.

"मैं देख रहा हूँ कि तुम मेरे भौतिकी के उपकरण, निहार रही हो मानुसिया," उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा.

भौतिकी के उपकरण! अच्छा! तो इन पेचीदा चीजों के संग्रह का यह नाम था!

पिता ने फिर अल्मारी खोली और मैरी को सब कुछ छूने की अनुमति दी!

उन्होंने मैरी को समझाया कि वे पत्थर,खनिजों के नमूने थे और वो अद्भुत गुलाबी रंग का पत्थर क्वार्ट्ज था, और वे रहस्यमय वस्तु इलेक्ट्रोस्कोप थी, और वे छोटी कांच की ट्यूब परखनलियाँ थीं.

मैरी के पिता भौतिकी के प्रोफेसर थे. उन्हें मैरी को यह भी बताया कि हर वैज्ञानिक सिद्धांत का प्रयोगों द्वारा परीक्षण किया जाता था.

अगले दिन, माँ को मैरी की जीभ की नोक पर एक छोटा हरे रंग का धब्बा दिखा.

वो क्या हो सकता था? कोई बीमारी? पहले तो मां डर गईं. लेकिन रहस्य जल्द ही खुलकर सामने आया.

मैरी ने रोते हुए कहा कि उसने अपनी जीभ की नोक से हरी स्याही को चखने की कोशिश की थी!

माँ उस पर ज़ोर से चिल्लाईं और फिर उन्होंने उसे एक गिलास दूध पिलाया.

बाद में, पिता ने मैरी से हरी स्याही के बारे में पूछताछ की. उन्होंने पूछा कि उसने ऐसी बेवकूफी क्यों की थी. मैरी ने जवाब दिया कि वो हरी चीज़ों के बारे में काफी कुछ पहले से ही जानती थी. उसने हरी स्याही को "परीक्षण" के लिए चखा था. कई चीजों का रंग हरा था - आम, पालक, मटर आदि. लेकिन वो यह पता करना चाहती थी कि क्या सभी हरी चीज़ों का स्वाद भी एक जैसा ही होता था.

उसके पिता ने कहा: "आह! आह!" फिर उन्होंने माँ की ओर मुड़कर कहा : "लगता है आज हमारी मानुसिया ने एक छोटा वैज्ञानिक प्रयोग किया है!”

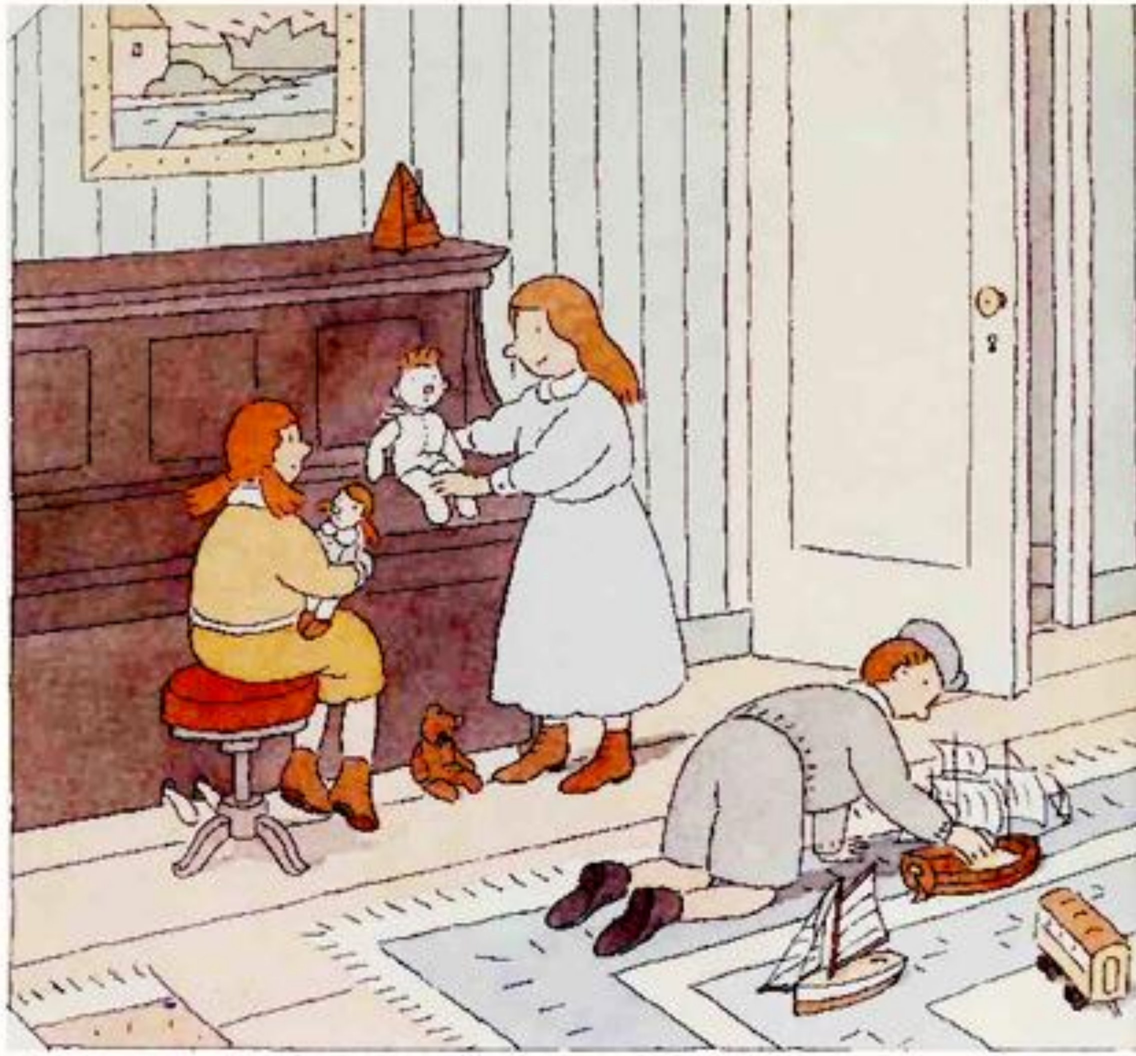

प्रत्येक शाम, बिस्तर पर सोने से कुछ समय पहले, सभी बच्चे माता-पिता से बैठक वाले कमरे में आकर मिलते थे.

तब वे सचित्र पुस्तकें पढ़ते थे या फिर शांति से कोई खेल खेलते थे. पिता भी पुस्तक पढ़ते थे या फिर माँ के साथ बातचीत करते थे.

माँ भी पढ़ती थीं या फिर पियानो बजाती थीं, लेकिन अक्सर वो बच्चों के लिए जूते बनाती थीं. मैरी की मां के लिए कोई भी काम अयोग्य नहीं था, और वो चमड़ा काटने के लिए मोची की रांपी और सिलाई के लिए सूजे का उपयोग अच्छी तरह करना जानती थीं.

जब माँ हथौड़े से छोटे-छोटे सुनहरी कीलें जूतों के तलवों में ठोकती थीं तो बच्चे उन आवाज़ों को सुनते थे. उन ठोक-ठोक की आवाज़ों में एक प्यारा संदेश छुपा होता था.

एक शाम, लंबी छुट्टी के आखिरी दिन, पिता ने बच्चों से सचित्र किताबें पढ़ने और खेलने को मना किया. उस शाम बच्चों को स्कूल की किताबें पढ़नी थीं, खासकर ब्रोन्या जो बहुत पढ़ने में काफी कमज़ोर थी. .

पिता ने पुराने कार्डबोर्ड बॉक्स से वर्णमाला के बड़े-बड़े अक्षर काटे थे. लेकिन उसके बावजूद ब्रोन्या कोई प्रगति नहीं कर पा रही थी.

ब्रोन्या ने एक किताब खोली और उसे अपने घुटनों पर रखकर कालीन पर बैठ गई. उसने ज़ोर से पढ़ना शुरू किया. वो पढ़ते-पढ़ते अटक रही थी और हर शब्द पर रूक-रूक कर उसके अक्षरों की ओर इंगित कर रही थी.

फिर अचानक ब्रोन्या के पास बैठी, मैरी ने अधीरता से उसके हाथों से पुस्तक खींची और उसने तुरंत पूरा पेज पढ़ डाला. फिर उसने आगे पढ़ने के लिए अगले पेज को पलटा!

उस समय मैरी को कमरे में पूर्ण शांति का अहसास हुआ. उसे लगा कि सभी की निगाहें उसे घूर रही थीं

"मैं शर्मिंदा हूँ, मुझे माफ करें!" वो चिल्लाई. "मैंने यह जानबूझ कर नहीं किया!" फिर अचानक वो रोने लगी.

"मैंने हमेशा ब्रोन्या की वर्णमाला कार्ड बक्से में भरने में मदद की थी," उसने रोते हुए कहा, "और तभी मैंने पढ़ना सीख लिया! पढ़ना बहुत आसान है! मुझे माफ करें!"

पिता और माँ ने उसे खुश करने की कोशिश की. उन्होंने कहा कि उसने कुछ भी गलत नहीं किया था, लेकिन माता-पिता दोनों इस बात से सहमत थे कि मैरी अभी भी पढ़ने के लिए बहुत छोटी थी. वह केवल चार साल की थी. ज़्यादा पढ़ने से उसका दिमाग थक जाता.

वे एक विलक्षण बुद्धि वाला बच्चा नहीं चाहते थे.

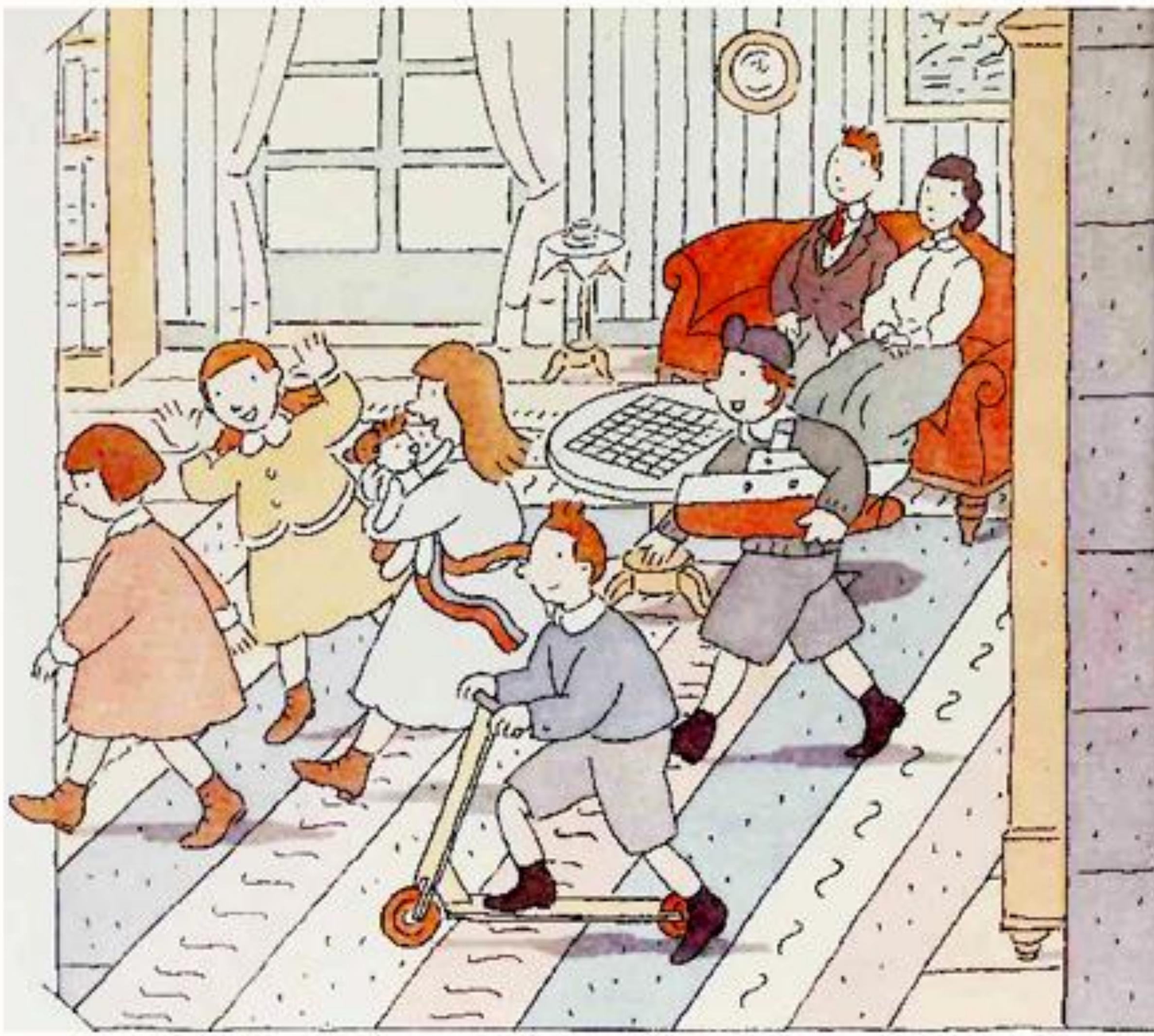

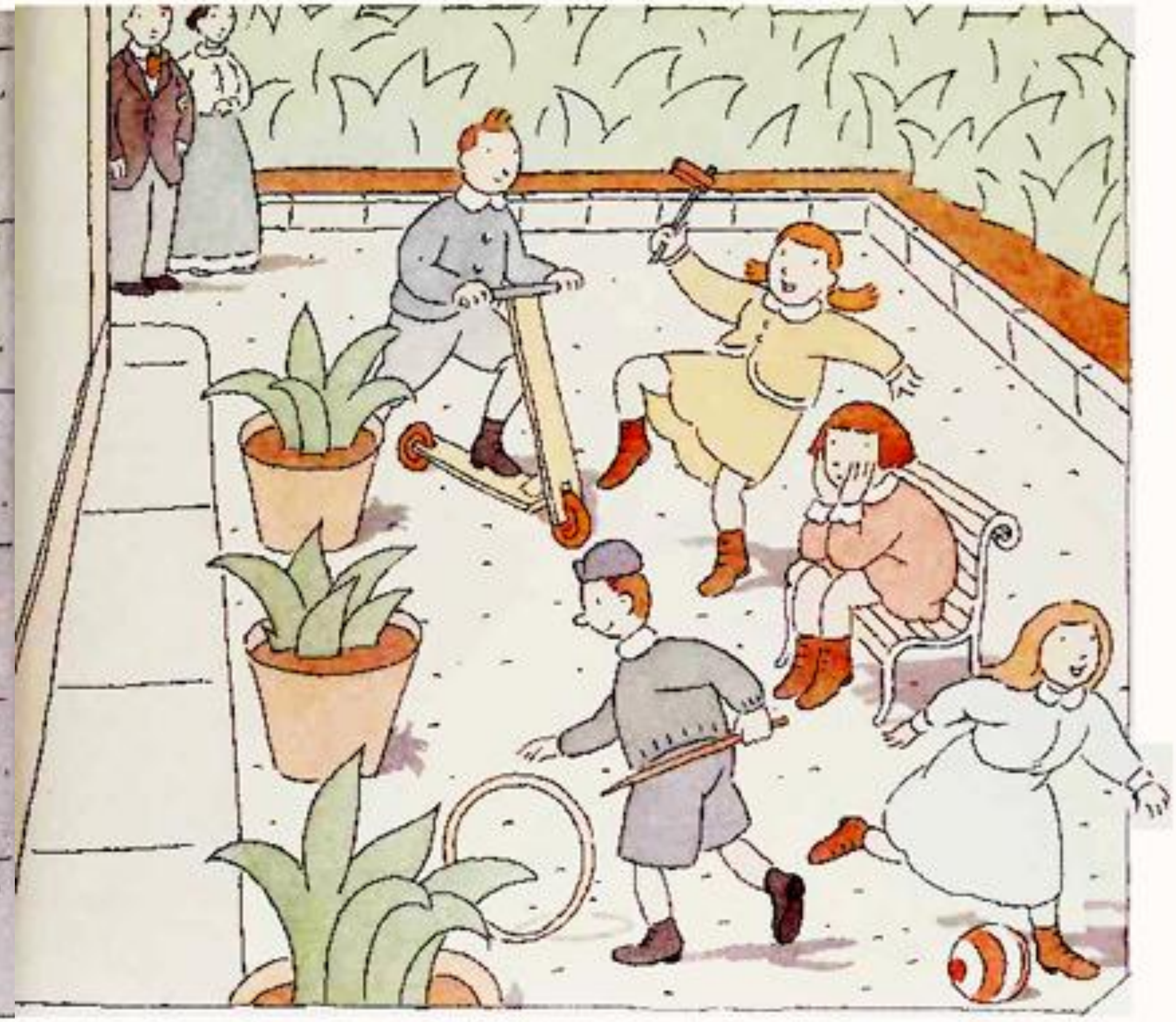

उसी क्षण माता-पिता ने मैरी को पढ़ने से रोकने के लिए उसपर नज़र रखनी शुरू की. उन्होंने भाइयों और बहनों को भी ऐसा करने के लिए कहा. मैरी के लिए पढ़ने की बजाए खेलना ज़्यादा ज़रूरी था.

अक्सर पूरे घर में चीख गूंजती : "देखो मैरी पढ़ रही है!" फिर मैरी के हाथों से किताब छीन ली जाती थी और उसे खेलने के लिए बगीचे में ले जाया जाता था.

लेकिन तब से मैरी के माता-पिता को एक छोटी लड़की की लगातार आवाज़ आती जो पूछती: "क्या अब मैं पढ़ सकती हूं? कृपया, क्या मैं पढ़ सकती हूं?"

अंत में, पिता इस नतीजे पर पहुँचे कि मैरी के लिए कम उम्र में ही स्कूल जाना सबसे अच्छा होगा. उसकी बुद्धि को व्यायाम की ज़रुरत थी.

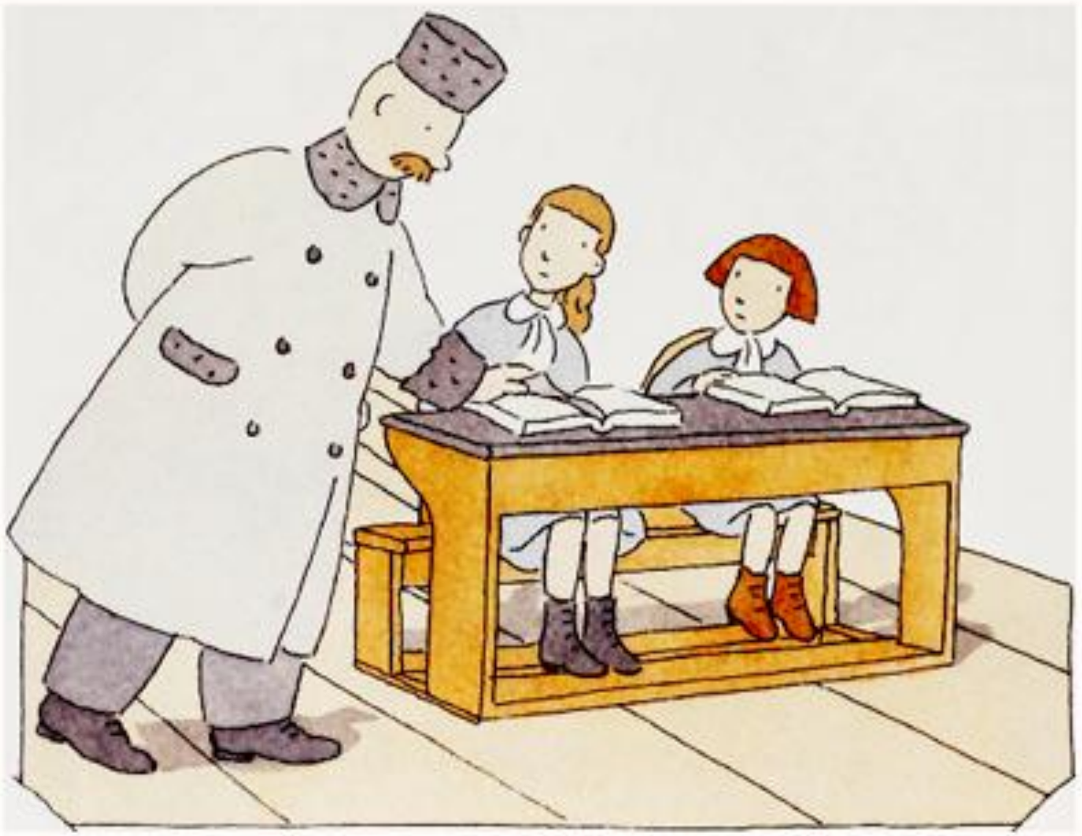

वैसे वो स्कूल में सबसे छोटी थी, लेकिन निस्संदेह मैरी सबसे चतुर थी.

उन दिनों रूस ने मैरी के देश पोलैंड पर आक्रमण किया. रूस ने जीत हासिल करने के बाद पोलैंड के स्कूलों को, रूसी इतिहास और रूसी भाषा सिखाने के लिए मजबूर किया.

अक्सर एक बहुत मतलबी इंस्पेक्टर स्कूल में आता था. स्कूल में इंस्पेक्टर का आगमन घंटी बजा कर किया जाता था. इंस्पेक्टर स्कूल में रूसी इतिहास की पढाई सुनिश्चित करने के लिए आता था.

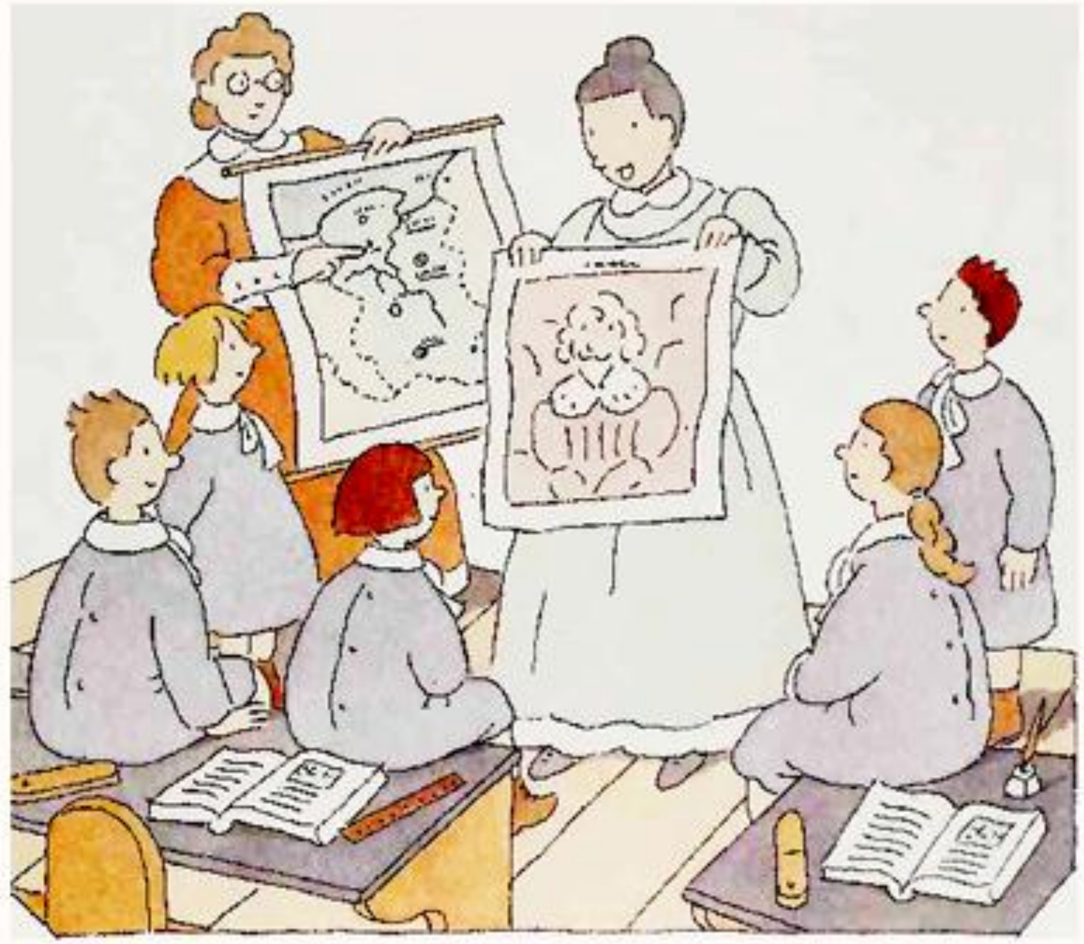

लेकिन शिक्षक चुपके से बच्चों को उनके देश पोलैंड का दुर्भाग्यपूर्ण इतिहास भी सिखाते थे. इससे बच्चे भ्रमित हो जाते थे. वे इतिहास की महत्वपूर्ण तारीखें और नाम भूल जाते थे!

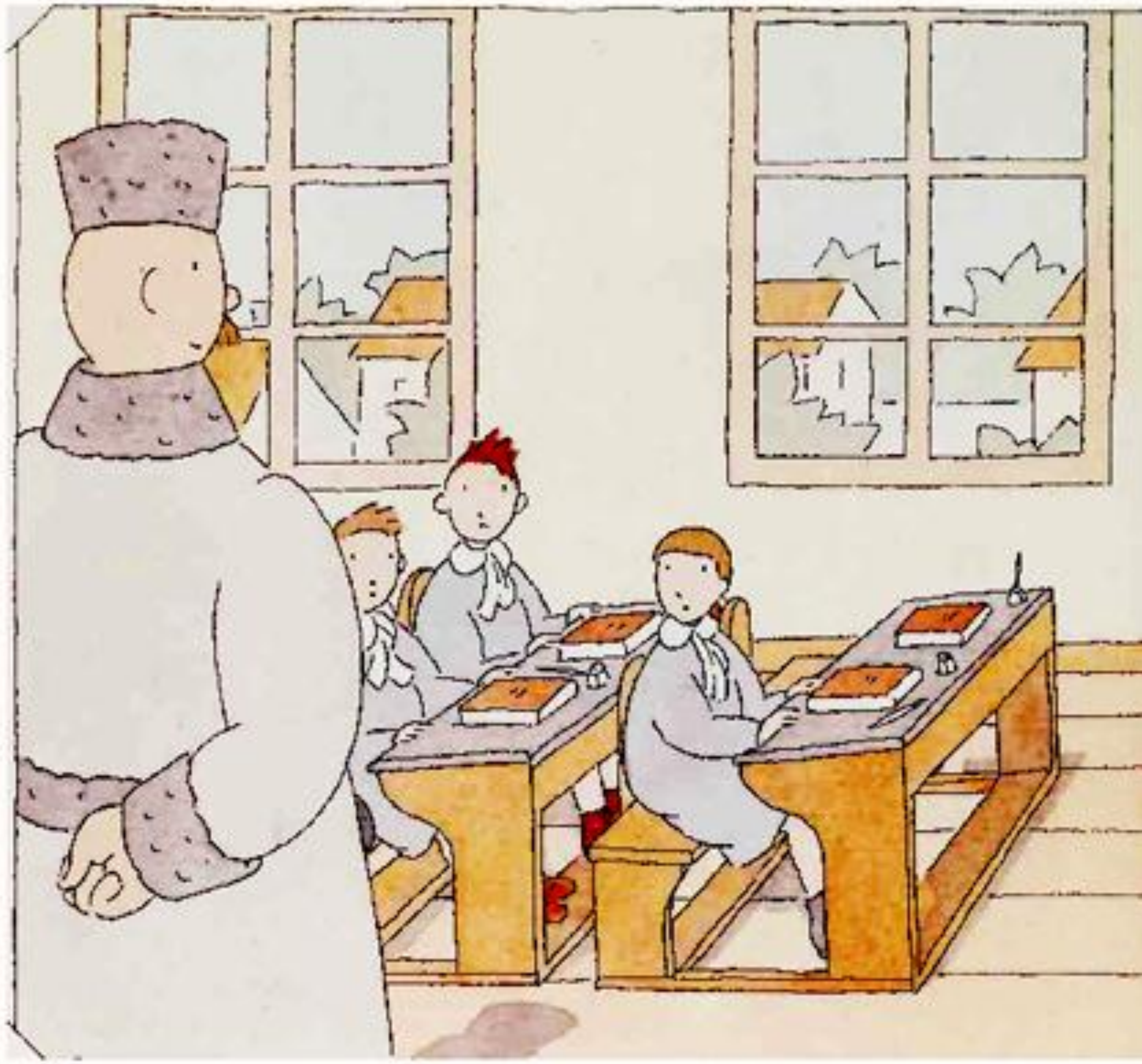

पर जब घंटी ने इंस्पेक्टर के आगमन का संकेत दिया, तो फिर मैरी ने बिना किसी त्रुटि या संकोच के प्रसिद्ध रूसी नामों और महत्वपूर्ण तिथियों को दोहराकर स्थिति को बचाया.

उससे संतुष्ट होकर इंस्पेक्टर चला गया. लेकिन बाद में, छोटी मैरी, संवेदनशील और भावुक होने के नाते, रोने लगी.

जैसे-जैसे समय बीता, मैरी को हर छोटी चीज के लिए रोना सही नहीं लगा. लेकिन उसका वैज्ञानिक विषयों को सीखने का प्रेम कभी नहीं बदला.

एक सपने की तरह, उसके पिता के अद्भुत भौतिकी उपकरण हमेशा उसके दिमाग में घूमते रहते थे.

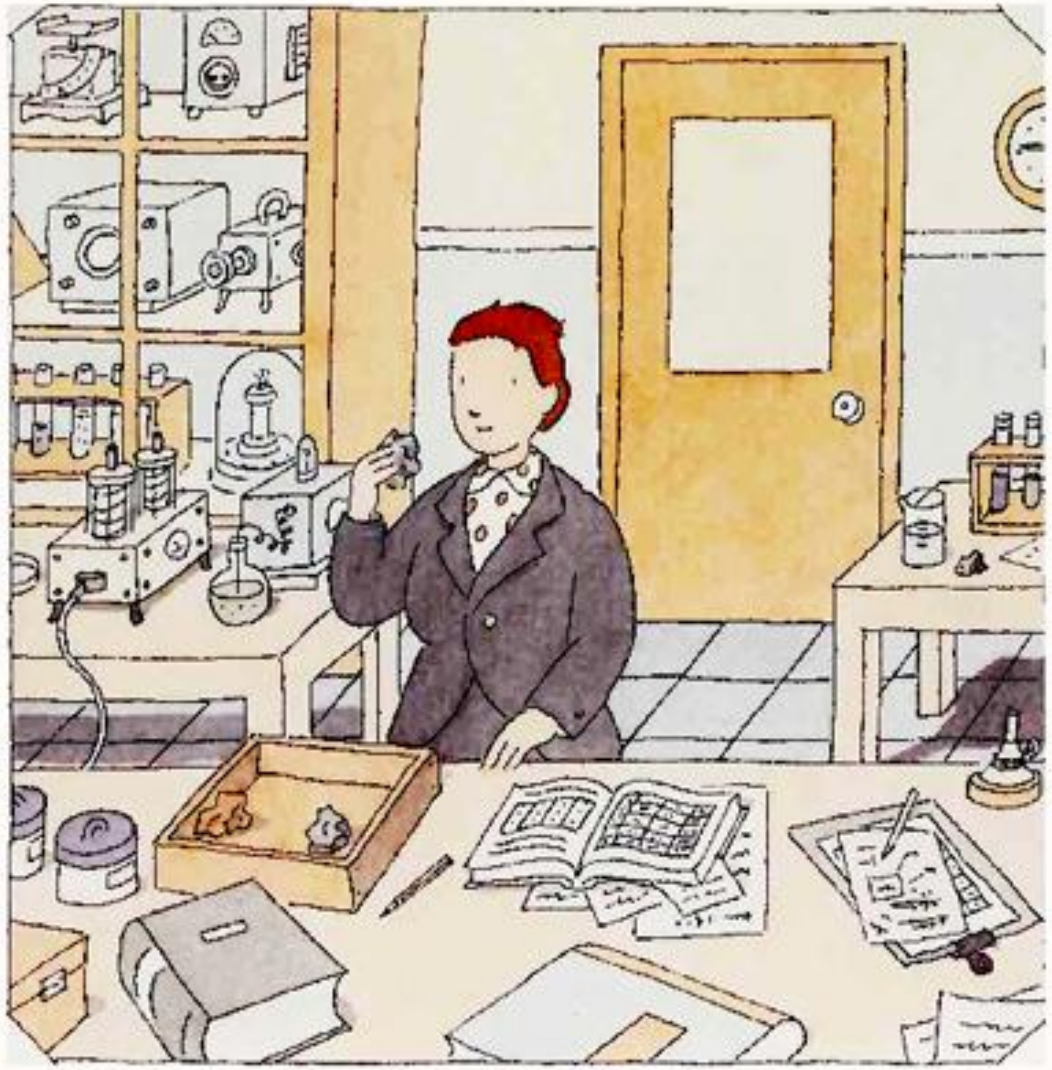

फिर मैरी ने भौतिकी का अध्ययन किया और वो एक महान वैज्ञानिक बनी. अपने पति, पियरे क्यूरी के साथ, उसने एक नया तत्व खोजा - रेडियम - जो लगातार किरणें, गर्मी और एक रहस्यमय नीली रोशनी उत्सर्जित करता था. वो बीसवीं सदी की महान वैज्ञानिक खोजों में से एक थी.

समाप्त